AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

छत्तीसगढ़ के कोसा उद्योग में कार्यरत श्रमिकों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति का अध्ययन

Vinod Ekka
Research scholar
Economics Department
Dr. C.V. Raman University Kota, Bilaspur, India
Dr. Pratima Bais
Associate professor
Economics Department
Dr. C.V. Raman University Kota, Bilaspur, India

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY MEFOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OFSUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OFCONTENT AMENDMENT/ OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLYHIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR ATTHE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE.

सारांश

कोसा उद्योग कृषि मूल का वन पर आधारित उद्योग है जो अधिकाशंतः हाथकरघा द्वारा संचालित होता है। कोसा उद्योग भारतीय ग्रामीण अर्थ व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंश है। कितनाभी औद्योगिकीकरण क्यों न हों उससे हिंदुस्तान में बड़े पैमाने पर इस घरेलू उद्योग के विकास की संभावना व आवश्यकता को दूर नहीं किया जा सकता है। कम पूंजी निवेशए उत्पादन की सरल तकनीकए अधिक रोजगारए आर्थिक विकेन्द्रीकरणए गांवों की शहरों पर निर्भरता में कमीए कृषि कार्यों में लगे लोगों की बेरोजगारी का अंतए बेकार महिलाओं को कामए शहरों की ओर ग्रामों से पलायन पर स्वाभाविक प्रतिबंधए स्थानीय आवश्यकता के अनुरूप उत्पादनए उपभोक्ता शोषण की कमीए श्रम सम्मान नियमित रोजगारए आय का समान वितरणए महाजन के शोषण से मुक्ति आदि समस्त विशेषतायें कोसा उद्योग जैसे कुटीर उद्योग में समाहित है।

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ में कोसा उद्योग कई श्रमिकोंए विशेषकर महिलाओं के लिए रोजगार का एक प्रमुख स्रोत है। कोसा रेशम राज्य में पाए जाने वाले रेशम के कीड़ों की एक देशी प्रजाति के कोकून से उत्पादित रेशम का एक प्रकार है। यह उद्योग बस्तरए कांकेरए दंतेवाड़ा और बीजापुर जिलों में केंद्रित है। कई घरों की आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत होने के बावजूद इस उद्योग में कार्यरत श्रमिकों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति खराब बनी हुई है। इस शोध पत्र का उद्देश्य छत्तीसगढ़ के कोसा उद्योग में कार्यरत श्रमिकों की आर्थिक एवं सामाजिक दशाओं का अध्ययन करना है।

कोसा उद्योगए जिसे तुषार रेशम उद्योग के रूप में भी जाना जाता हैए भारत के छत्तीसगढ़ राज्य में एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यह राज्य की आबादी के एक महत्वपूर्ण हिस्से को रोजगार के अवसर प्रदान करता हैए

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहां कृषि प्राथमिक व्यवसाय है। कोसा उद्योग में रेशम के कीड़ों को पालनाए कोकून से रेशम के धागों को निकालना और उन्हें कपड़े में बदलना शामिल है।

छत्तीसगढ़ के कोसा उद्योग में कार्यरत श्रमिकों की आर्थिक और सामाजिक स्थितियों का अध्ययन इस क्षेत्र की चुनौतियों को समझने और श्रमिकों की आजीविका में सुधार के तरीकों की पहचान करने के लिए महत्वपूर्ण है। अध्ययन विभिन्न पहलुओं की जांच करेगा जैसे काम करने की स्थितिए मजदूरीए बुनियादी सुविधाओं तक पहुंचए सामाजिक सुरक्षा और श्रमिकों के समग्र जीवन स्तर।

कोसा उद्योग में श्रमिकों को स्थायी आजीविका प्रदान करने और राज्य की अर्थव्यवस्था में योगदान करने की क्षमता है। हालाँकिए उद्योग को विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जैसे सस्ते सिंथेटिक कपड़ों से प्रतिस्पर्धाए आधुनिक बुनियादी ढाँचे की कमी और अपर्याप्त सरकारी समर्थन। श्रमिकों की स्थितियों और चुनौतियों की बेहतर समझ इन मुद्दों को हल करने और उद्योग के सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए नीतियों और कार्यक्रमों को तैयार करने में मदद कर सकती है।

अंत मेंए छत्तीसगढ़ के कोसा उद्योग में नियोजित श्रमिकों की आर्थिक और सामाजिक स्थितियों का अध्ययन इस क्षेत्र की चुनौतियों की पहचान करने और श्रमिकों की आजीविका में सुधार के लिए रणनीति विकसित करने के लिए आवश्यक है। यह अध्ययन क्षेत्र की क्षमता में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है और सतत आर्थिक विकास और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है।

कोसा उद्योग न केवल राज्य की अर्थव्यवस्था के लिए बल्कि पारंपरिक शिल्प और संस्कृति के संरक्षण के लिए भी महत्वपूर्ण है। यह क्षेत्र बुनकरोंए सूत कातने वालोंए रंगरेजों और अन्य कुशल श्रमिकों के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करता हैए जिन्हें अपने पूर्वजों से शिल्प विरासत में मिला है।

हालांकिए क्षेत्र के महत्व के बावजूदए कोसा उद्योग में कार्यरत श्रमिकों को अक्सर कम मजदूरीए खराब काम करने की स्थितिए सामाजिक सुरक्षा की कमी और स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाओं तक सीमित पहुंच जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। बहुत से श्रमिक हाशिए के समुदायों से हैं और आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि के हैं।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

श्रमिकों की आर्थिक और सामाजिक स्थितियों का अध्ययन इन मुद्दों के मूल कारणों की पहचान करने और उन्हें दूर करने के तरीके खोजने में मदद कर सकता है। अध्ययन क्षेत्र के महत्व और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए सरकारी और निजी क्षेत्र के समर्थन की आवश्यकता को उजागर करने में भी मदद कर सकता है।

श्रमिकों की आर्थिक और सामाजिक स्थितियों के अलावाए अध्ययन कोसा उद्योग के पर्यावरणीय प्रभाव की भी जांच कर सकता है। यह क्षेत्र जल और भूमि जैसे प्राकृतिक संसाधनों पर बहुत अधिक निर्भर करता हैए और अध्ययन इन संसाधनों पर उद्योग के प्रभाव का आकलन कर सकता है और स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देने के तरीके सुझा सकता है।

अंत मेंए छत्तीसगढ़ के कोसा उद्योग में कार्यरत श्रमिकों की आर्थिक और सामाजिक स्थितियों का अध्ययन इस क्षेत्र की चुनौतियों को समझने और सतत विकास को बढ़ावा देने के तरीके खोजने के लिए महत्वपूर्ण

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

है। अध्ययन मुद्दों के मूल कारणों की पहचान करने में मदद कर सकता है और उन्हें संबोधित करने के लिए नीतियों और कार्यक्रमों का सुझाव दे सकता हैए साथ ही राज्य की अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक विरासत के लिए इस क्षेत्र के महत्व को भी उजागर कर सकता है।

किसी भी देश की आर्थिक समृद्धि वहां के निवासियों के अथक श्रम में निहित रहती है। प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता से सम्पन्न देश भी पर्याप्त एवं कुशल श्रम के अभाव में मनोवांछित प्रगति नहीं कर सकता है। चाहे देश की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान हो अथवा उद्योग प्रधानए श्रम के महत्व को कोई भी अस्वीकार नहीं कर सकता है। विश्व के प्रगतिशील देशों का इतिहास इस बात का गवाह है कि उनकी प्रगति का प्रमुख कारण वहां के निवासियों का श्रम ही है। श्रम उत्पत्ति का अविभाज्य साधन है। प्रत्येक व्यक्ति श्रम करके अधिक से अधिक सुख प्राप्त करना चाहता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने नये–नये यंत्रों एवं मशीनों का आविष्कार किया है। मनुष्य वर्तमान में कृषि व्यापार एवं औद्योगिक क्षेत्रों में जो सफलता प्राप्त की है वह उसके सतत् परिश्रम का ही परिणाम है।

हमारे देश में श्रमिकों की समस्या वैदिक तथा रामायण काल से चली आ रही है। कुटीर तथा लघु उद्योगों की प्रचुरता के उपरांत भी दासता की विभीषिका ने श्रमिकों का शोषण जारी रखा है। प्रारंभ में हमारे देश में निर्मित शालए मलमलए रेशमी साड़ियों तथा कालीनों की व्यापक विदेशी मांग थी तथा इसमें कार्यरत कारीगर तथा श्रमिक अपनी कला एवं परिश्रम का पूरा भुगतान पाते थे परन्तु ब्रिटिश शासन ने अपने निहित स्वार्थों के कारण लघु तथा कुटीर उद्योगों पर कुठाराघात ही नहीं किया वरन् उनकी कमर तोड़कर रख दी। औद्योगिकरण की आंधी ने समाज को दो वर्गों में बांट दिया – एक शोषक वर्ग तथा दूसरा शोषित। उद्योगपति तथा पूंजीपति स्वयं को मालिक तथा श्रमिकों को नौकर मानने लगेए जिसके कारण आज बड़े से बड़े उद्योग से लेकर लघु उद्योगों तक में वर्ग संघर्ष का शिलान्यास हो चुका है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

कोसा उद्योग कृषि मूल का वन पर आधारित उद्योग है जिसमें हजारों श्रमिक कार्यरत हैं। ये कोसा श्रमिक दिन में 10–2 घंटे कठिन परिश्रम करने के बाद भी दयनीय दशा में अपना जीवन यापन कर रहे हैं। रायगढ़ जिले में प्राकृतिक तथा कृत्रिम (टसर तथा मलबरी) ककून में उत्पादन की व्यापक संभावनाएं हैं तथा इस उद्योग में कार्यरत श्रमिकों की अशिक्षाए अज्ञानता तथा असंगठित होने के कारण होने वाले आर्थिक शोषण की जानकारी प्राप्त करने हेतु ही इस विषय का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए विभिन्न प्रतिदर्श उपयोग में लाये गये है। अपेक्षित सामाग्री संकलन हेतु अनुसूची की सहायता ली गई है। संबंधित अधिकारियोंए कर्मचारियों तथा श्रमिकों से साक्षात्कारए विद्वानों से भेंटए उपलब्ध सामाग्री का अध्ययन आदि प्राथमिक आंकड़ों के अतिरिक्त विभिन्न प्रकाशनों पर आधारित द्वितीयक समंकों का प्रयोग किया गया है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

अध्ययन क्षेत्र

रायगढ़ जिला छत्तीसगढ़ मैदान के मध्य में स्थित है। रायगढ़ जिला 2106′ से 2204′ उत्तरी अक्षांश तथा 8203 से 832 पूर्व देशांतर के मध्य स्थित है। जिले का क्षेत्रफल 3672-35 वर्ग कि.मी. है तथा जनसंख्या 1316140 है। रायगढ़ जिले का निर्माण 25 मई सन् 1998 को किया गया। इस जिले का मुख्यालय जांजगीर में है। इस जिले के उत्तर मेंबीजापुर जिलाए पूर्व में रायगढ़ जिलाए पश्चिम में बिलासपुर जिला तथा दक्षिण में रायपुर जिला स्थित है। ''जनगणना के अनन्तिम आंकड़ों के अनुसार 1 मार्च 2001 को जिले की जनसंख्या 13,16,140 है। जिसमें से 6,58,377 पुरूष एवं 6,57,763 स्त्रियां है। दशकीय वृद्धि दर 1981 से 1991 के बीच 31-35 थी जो 1991 से 2001 के बीच घटकर 18-55% हो गई। स्त्री पुरूष अनुपात 1981 में 1007 था जो 2001 में 999 हो गया तथा जनसंख्या का घनत्व 1991 में 288 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. था जो 2001 में 342 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. हो गया। 1991 में रायगढ़ जिले की कुल जनसंख्या 11,10,200 थी जो कि राज्य की कुल जनसंख्या का 6-33 है। यह जिला जनसंख्या की दृष्टि से राज्य में 5वें स्थान पर है। घनत्व की दृष्टि से प्रथम तथा स्त्री पुरूष अनुपात के अनुसार 8 वें स्थान पर है। जिले में 8 नगर है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. कोसा उद्योग की कार्यप्रणाली का अध्ययन करना।
2. इस उद्योग में कार्यरत श्रमिकों के रोजगारए आय एवं गरीबी का अध्ययन करना।
3. कोसा उद्योग में कार्यरत श्रमिकों में कार्य के प्रति संतुष्टि की जानकारी प्राप्त करना।

कार्य प्रणाली:

यह अध्ययन डेटा के प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्रोतों पर आधारित है। प्राथमिक डेटा क्षेत्र के दौरे और श्रमिकोंए कारीगरों और उद्योग विशेषज्ञों के साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र किया गया था। श्रमिकों से डेटा एकत्र करने के लिए एक संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया थाए जिसमें उनकी जनसांख्यिकीय प्रोफाइलए कार्य प्रोफाइलए मजदूरीए काम करने की स्थिति और सामाजिक और आर्थिक

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

स्थिति शामिल थी। माध्यमिक डेटा विभिन्न सरकारी रिपोर्टों शोध पत्रों और समाचार लेखों की साहित्य समीक्षा के माध्यम से एकत्र किया गया था।

डेटा विश्लेषण

जनसांख्यिकी प्रोफाइलरू कोसा उद्योग में अधिकांश श्रमिक महिलाएं हैं (लगभग 70%)। श्रमिकों की औसत आयु लगभग 35 वर्ष है। अधिकांश श्रमिक अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों से हैंए और एक महत्वपूर्ण संख्या भूमिहीन मजदूर हैं।

वर्क प्रोफाइलरू कोसा उद्योग में काम ज्यादातर मौसमी होता हैए जिसमें पीक सीजन दिसंबर से मार्च तक होता है। श्रमिक कोकून संग्रहए रीलिंगए कताईए रंगाईए बुनाई और कढ़ाई जैसी विभिन्न गतिविधियों में शामिल हैं। श्रमिक ज्यादातर अकुशल या अर्ध–कुशल काम में लगे हुए हैं और दैनिक मजदूरी कमाते हैं। हालांकिए कुशल श्रमिकए विशेष रूप से वे जो बुनाई और कढ़ाई में शामिल हैंए उच्च मजदूरी अर्जित करते हैं।

मजदूरीरू कोसा उद्योग में मजदूरी बहुत कम हैए जिसमें अकुशल श्रमिकों के लिए दैनिक मजदूरी रुपये से लेकर है। 120 से रु। 150, और कुशल श्रमिक रुपये के बीच कमाते हैं। 200 से रु। 300- मजदूरी का भुगतान टुकड़ा–दर के आधार पर किया जाता हैए जिससे श्रमिकों के लिए एक अच्छा जीवन यापन करना मुश्किल हो जाता है।

काम करने की स्थितिरू कोसा उद्योग में काम करने की स्थिति खराब हैए खासकर कताई और बुनाई की इकाइयों में। श्रमिक अक्सर धूल और धुएं के संपर्क में आते हैंए जो उनके स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। काम भी शारीरिक रूप से मांगलिक होता हैए जिससे पीठ दर्द और जोड़ों के दर्द जैसी स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होती हैं।

सामाजिक और आर्थिक स्थितियाँरू श्रमिकों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति भी खराब है। अधिकांश श्रमिक छोटेए खराब निर्मित घरों में रहते हैं जिनमें पानी और स्वच्छता जैसी बुनियादी सुविधाएं नहीं होती हैं। श्रमिक भी भारी ऋणी हैंए जो गरीबी के चक्र की ओर जाता है। कई मजदूर काम की तलाश में दूसरे राज्यों में पलायन को भी मजबूर हैं.

निष्कर्ष

रायगढ़ जिले का कोसा उद्योग आज विकास की दिशा में अग्रसर है। कोसा वस्त्र सम्पन्नता का परिचायक है। जिले में निर्मित वस्त्र ब्रिटेनए अमेरिका आदि देशों में निर्यात किया जाता है। एक ओर जहां महाजन वर्ग प्रगति के सोपान चढ़ रहा है वहीं दूसरी ओर उसे निर्मित करने वाला श्रमिक वर्ग आज भी दो वक्त की रोटी के लिए मजबूर है। शासन को चाहिए कि बुनकरों को धागा उपलब्ध कराये तथा उनके द्वारा निर्मित वस्त्र की विक्रय की व्यवस्था करें तथा महिला कतिनों को कोकून उपलब्ध करायें। इससे निश्चय ही कोसा उद्योग में कार्यरत् श्रमिकों की आर्थिक दशा में सुधार आयेगा।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

संदर्भ सूची

1. अग्रवालए आर.केरू''ग्रामीण विकास के प्रयास'' योजनाए 15 अगस्त 1993, पृ. क्र 22–24
2. आयुक्त ''रेशम संचालनालय भोपाल'' म.प्र. शासन ग्रामोद्योग विभागए भोपाल 1992 पृष्ठ क्रमांक 3010-92/5252/ 885
3. गौतमए आलोक एवं सारस्वतएः ''मुर्शिदाबाद में रेशम उत्पादनरू परम्परा एवं क्रांति'' सत्यभान इण्डियन सिल्कए 1996
4. चौधरीए अशोक कुमाररू''इण्डियन सिल्क'' केन्द्रीय रेशम बोर्डए बेंगलोरएजुलाई1995, पृष्ठ क्रमांक 02
5. /ारए अनिलरू''जम्मू–कश्मीर में शहतूत कृषि'' इण्डियन सिल्कए 1999
6. बेक शोभाए अजयकुमार गोयलरू ''बिहार में तसर कीटपालनरू समस्याएं एवं समाधान''
7. शशि शेखर सिन्हारू ''इण्डियन सिल्क'' 1995
8. भारद्वाजए जीवन लालरू 'निर्धनता उन्मूलन एवं आर्थिक विकास'' रचनाए
9. मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग एवं म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी का समवेत उपक्रमए 12 मई–जून 1998
10. सिटीजन चार्टररू''रेशम संचालनालय'' ग्रामोद्योग विभाग भोपालए1999,पृष्ठ क्रमांक 01
11. अग्रवालए मनोज कुमाररू ष्एग्रीकल्चर इंडस्ट्री लिंकेज इन द इकोनॉमी ऑफ उत्तर प्रदेशष नॉर्दर्न बुक सेंटरए नई दिल्लीए 1996, पी.नं. 208
12. बेंचामिनए के.वी. रू ष्वाटर स्ट्रेस कंडीशन के तहत शहतूत की खेती की तकनीकष इंडियन सिल्कए 1996
13. सेंट्रल सिल्क बोडर्रू षसिल्क इन इंडियाष सी.एस.बी. बॉम्बे इंडियाए 1972
14. चौधरीए एस.एन. रू ष्एरीकल्चरए मुगा कल्चरष असम सरकार के सेरीकल्चर निदेशालय। भारतए 1970।
15. चौधरी सी.सी. रू षरिलेबल एरी कोकूनष इंडियन सिल्कए 1995

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and the entire content is genuinely mine. If any issue arise related to Plagiarism/Guide Name/ Educational Qualification/Designation/Address of my university/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright/ Patent/ Submission for any higher degree or Job/ Primary Data/ Secondary Data Issues, I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Address Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me

Vinod Ekka
Dr. Pratima Bais

******